International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 59-59

वेदो के अनुसार प्रजातांत्रिक व्यवस्था का यथार्थ विश्लेषण

प्रदीप तिवारी

Sanskrit Dept. Mithila Sanskrit Research Institute, Darbhanga, Bihar, India.

प्रस्तावना

'साहित्य' या 'कृति' समाज का दर्पण है दूसरे शब्दों में, वही साहित्य, साहित्य है जिसमें समाज का समग्र चित्रण हो। समाज के समग्र चित्रण से तात्पर्य साहित्य में तत्कालीन समाज का सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा वैज्ञानिक प्रत्येक पहलू का यथार्थ चित्रण है और वैदिक वाङ्मय भी इससे पृथक् नहीं है। चारों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद) एवं उनकी संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदांग इसका कमोवेश भाग में अनुशीलन करती हुई प्रतीत होती हैं तथा इस दृष्टिकोण से इसमें राज–व्यवस्थाविषयक विचार भी विद्यमान हैं। ठीक ही कहा गया है। "साहित्य अपने व्यापक अर्थ में समाज के गूँगे इतिहास का मुखर सहोदर है"।

वेदों के अनुशीलन से उस युग की राजनैतिक दशा तथा शासन–संबंधी विषयों का ज्ञान भली–भाँति पूर्वक होता है। अतः आज के लोकतांत्रिक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए अपना ध्यान वेदो के सर्वोत्कृष्ट एवं प्राचीनतम साहित्य में वर्णित राज–व्यवस्था की ओर गया, जिससे आज की लोकतांत्रिक समस्या का निदान हो सके।

"सत्यं बृहदतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भवस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवीं नः कृणोतु।।"[1]

वेदों में राजा के अधिकार एवं कर्त्तव्य की भी विशद विवेचना है। राजा का कर्त्तव्य केवल शान्तिकाल में प्रजा का पालन ही नहीं, वरन उसका एक प्रधान कार्य युद्ध कालिन शत्रुओं के आक्रमण से अपनी प्रजा की सुरक्षा करना भी था।

"इयं ते राट् ..... यन्तासि यमनो ध्रुवोऽसि धरुणः।
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा।।"[2]

अर्थात्, "तुमको यह राष्ट्र दिया जाता है ..... तुम इसके नियमन करने वाले हो, तु दृढ़ हो तथा धारणकर्ता (राज्य या उत्तरदायित्व के योग्य) हो। कृषिकर्म के लिए, कल्याण के लिए, समृद्धि के लिए तथा पुष्टि के लिए तुम्हें (यह राज्य दिया गया है)।" राजा को सत्यनिष्ठ बताया गया है–

"त्वमस्यावपनी जनानामदितिः कामदुधा पप्रथाना।
यत ऊनं तत आ पूरयति प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य।।"[3]

'ऐतरेय ब्राह्मण' (8/14) के 'ऐन्द्रमहाभिषेक' के संदर्भ में वैदिक युगीन भारत की विभिन्न शासन–पद्धतियों का पता चलता है, जिनके नाम हैं– 1. साम्राज्य, 2. भौज्य, 3. स्वराज्य, 4. वैराज्य 5. पारमेष्ठ्य, 6. राज्य, 7. महाराज्य, 8. आधिपत्यमय तथा 9. सामन्तपर्यायी। समस्त शासन–व्यवस्था को पाँच विभागों में विभक्त किया जा सकता है– 1. कुटुम्ब, गृह या कुल, 2. ग्राम, 3. विश, 4. जन तथा 5. राष्ट्र। परन्तु वेद एकतन्त्र शासन–प्रणाली को पसन्द न करके प्रजातन्त्र शासन–प्रणाली का पक्षधर है। भूमि–सूक्त में स्पष्टतः कहा गया है कि राजा (प्रजापालक क्षत्रिय) का निर्वाचन प्रजाओं द्वारा होना चाहिए।

अधिकारी 'रत्नी' के नाम से प्रख्यात थे, जिनके पास अभिषेक से पहले राजा को जाना आवश्यक था ओर इनके नाम हैं– 1. सेनानी (सेना का अध्यक्ष), 2. पुरोहित, 3. अभिषेचनीय राजा, 4. महिषी (राजा की पटरानी), 5. सूत, ग्रामणी (ग्राम या पंचायत का अध्यक्ष), 7. क्षतृ, 8. संग्रहीत् (कोषाध्यक्ष), 9. भागदुह (प्रजाओं से कर वसूल करने वाले अधिकारी), 10. अक्षावाप (रूपए–पैसों का हिसाब रखने वाले अधिकारी), 11. गोविकर्त (जंगल का अधिकारी)।

वेद की सम्मति में प्रत्येक राष्ट्र को तीन प्रकार की सेनायें रखनी चाहिये– स्थलसेना, जलसेना ओर वायुसेना। अथर्ववेद (11.10.2) में सेनापति को संबोधन करके प्रजाजन कह रहे हैं–

"ईशां वो वेद राज्यं त्रिषन्धे अरुणैः केतुभिः सह।"

अर्थात् "हे तीन प्रकार की सेनाओं का मेल रखने वाले (त्रिषन्धे) सेनापति लाल रंग के (अरुणैः) झण्डों से युक्त (केतुभिः) तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे राज्य को हम जानते हैं।"

वेदों में कर–व्यवस्था और न्याय–व्यवस्था पर भी प्रकाश पड़ता है। सभा उच्च न्यायालय का कार्य–निष्पादन करती थी। इसका कार्य अपराधियों के अपराध का निर्णय करना तथा तद्नुसार दण्ड–विधान होता था। प्रजाजन राज्य को कर प्रदान करते थे–

"उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घे न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।।"

वस्तुतः वेद का भूमि–सूक्त तो वास्तव में किसी एक विशेष देश का राष्ट्रीय गीत न होकर मानवमात्र का राष्ट्रीय गीत है। इसमें तो एक आदर्श राष्ट्र की कल्पना करके उसके राष्ट्रभक्त प्रजाजनों द्वारा उसकी महिमा और विभूति के गीत गवाये गये हैं और इस प्रकार एक आदर्श राष्ट्र का चित्र उपस्थित करके यह उपदेश दिया गया है कि राष्ट्र की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए राष्ट्र में क्या–क्या कुछ होना चाहिए।

इस प्रकार वेदों के अन्तर्गत निहित राज–व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है, जिससे हम वर्तमान प्रजातन्त्र–पद्धति में सुधार की प्रेरणा ही नहीं, अपितु मार्गदर्शन भी प्राप्त होते हैं। वस्तुतः ग्राम सभा तथा राष्ट्र समिति के सहायता से देश का मंगल–साधन करना ही वैदिक राजा का परम लक्ष्य होता है।

संदर्भग्रन्थ–सूची

1. झा एवं श्रीमाली (1984), प्राचीन भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
2. गैरोला वाचस्पति (1997), वैदिक साहित्य और संस्कृति, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।
3. कुमारी डॉ0 किरण (2009), वैदिक साहित्य और संस्कृति, न्यू भारती बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली।